एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अलसी की फसल में समन्वित रोग प्रबन्धन

(*आदित्य तिवारी[1] एवं श्रेया तिवारी[2])

[1]ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सतना, म.प्र.

[2]एम.एस.सी. (कृषि प्रसार) छात्रा, म.गाँ.चि.ग्रा.वि., चित्रकूट, सतना, म.प्र.

*संवादी लेखक का ईमेल पता: adityatiwari1999@gmail.com

अलसी बहुमूल्य बहुउद्देशीय तिलहन फसल है। भारत में अलसी की खेती लगभग 2.96 लाख हेक्टेयर में की जाती है। उत्पादन की दृष्टि में भारत में अलसी की खेती विश्व के कुल क्षेत्रफल का 15 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में भारत दूसरे, उत्पादन में तीसरे एवं प्रति हेक्टेयर उपज की दृष्टि से आठवें स्थान पर है। अलसी के प्रमुख उत्पादक राज्य मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान एवं उडीसा हैं। असली को सामान्य तौर पर मिश्रित फसल, सह फसल, पैरा या उतेरा फसल के रूप में उगाया जाता है। अलसी का आच्छादित क्षेत्रफल म0प्र0 में 1.09 लाख हेक्टेयर है जबकि उत्पादकता 523 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर एवं उत्पादन 57400 टन है। देश में हुये अनुसंधान से ज्ञात होता है कि उचित प्रबन्धन के माध्यम से अलसी की उपज में 2 से 2.5 गुना वृद्धि की जा सकती है।

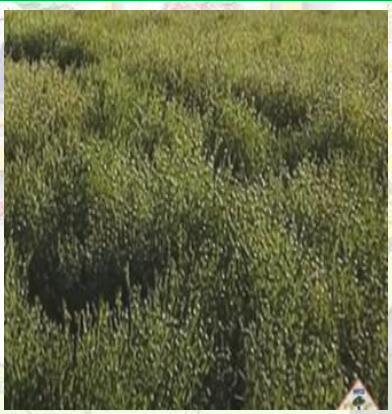
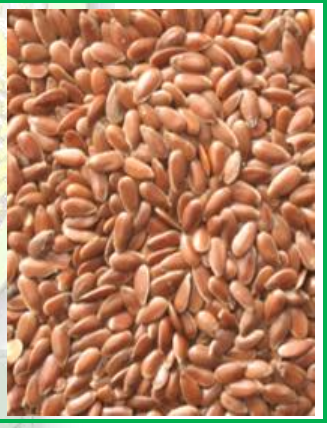

उपयोगिता

अलसी के सभी भागों का प्रयोग परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप में किया जाता है। अलसी का उपयोग सामान्यतः खाने एवं उद्योगों के साथ दवा बनाने में भी किया जाता है। अलसी के तेल से पेंट्स, वार्निश, स्नेहक, पैड इक तथा प्रेस प्रिंटंग हेतु स्वाही तैयार करने के साथ बीजों को पुल्टिस बनाकर फोड़ फुन्सी में प्रयोग में लाया जाता है। तेल का प्रयोग खाने, साबुन बनाने तथा दीपक जलाने में भी किया जाता है। वर्तमान में अलसी की मॉग बढ़ी है। इसके तना से अच्छी गुणवत्ता का रेसा प्राप्त कर लिनने तैयार किया जाता है। पौधे का काष्ठीय भाग तथा छोटे–छोटे रेसे कागज बनाने में काम आते हैं। अलसी की खली का प्रयोग पशु आहार में किया जाता है। खली में विभिन्न पोषक तत्वों की मात्रा होने के कारण खाद के रूप में भी इसकी उपयोगिता है।

अलसी में लगने वाले प्रमुख रोग–

1. गेरुआ रोग(रस्ट)– इस रोग का फैलाव मेलेप्पसोरा लाइनाई फफूद से होता है। रोग के शुरूआत में पत्तियों के दोनों तरफ चमकदार नारंगी स्पॉट आ जाते है और क्रमशः पौधे के सभी भागों में फैल जाते हैं।

रोग का नियंत्रण– गेरुआ रोग के नियंत्रण हेतु जेएलएस 9, जे.एलएस 27, जेएलएस 66, जेएलएस 67, जेएलएस 73 नामक अनुसंशित रोगरोधी किस्मों को प्रयोग में लायें। गेरुआ रोग के नियंत्रण हेतु रसायनिक दवा टेबूकोनाजोल 2 प्रति. 1लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से अथवा 500 लीटर पानी में केप्टान हेक्साकोनाजाल का 500 से 600 ग्राम मात्रा घोलकर छिड़काव करें।

2. उकठा रोग (विल्ट)– उकठा मृदाजनित रोग है तथा अलसी की फसल का मुख्य हानिकारक रोग है। यह रोग फ्यूजेरियम अक्सीस्पोरम लाईनाई द्वारा उत्पन्न होता है। यह रोग फसल की किसी भी अवस्था में उत्पन्न हो सकता है। इसके रोगजनक खेत में फसल अवशेषों एवं मृदा में उपस्थित रहते हैं तथा अनुकूल वातावरण में पौधों पर संक्रमण करते हैं। रोगी पौधे की पत्तियॉ मुरझा कर गिर जाती हैं। रोगी पौधों की जड़ों में काला रंग भदरंग भाग, लम्बी धारियॉ दिखाई देती है।

रोग का नियंत्रण– रोग के नियंत्रण हेतु बुवाई से पूर्व थाइरम 3 ग्राम प्रति किलो या वेविस्टीन 2 ग्राम एवं थाइरम 2 ग्राम बराबर मात्रा में मिलाकर प्रति किलो की दर से बीजोपचार करें। फसलचक्र अपनाने से भी नियंत्रण किया जा सकता है। चना एवं अलसी 3 : 9 के अनुपात में अन्तवर्ती फसलों में लगायें एवं संस्तुत रोग निरोधी किस्म को उपयोग में लायें।

3. भभूतिया रोग (चूर्णिल आसिता)– यह रोग आइडियम लाईनाई नामक फफूद से उत्पन्न होता है। इस रोग का प्रभाव देर से बुवाई पर एवं शीतकालीन वर्षा होने तथा अधिक समय तक आर्द्रता बने रहने पर प्रकोप बढ़ जाता है। रोग से प्रभावित पौधों में पुरानी निचली पत्तियों में सफेद चकते पड़ जाते हैं और फसल पर पत्तियों पर सफेद चूर्ण की तरह जम जाता है। रोग के अधिक बढ़ने पर दाने सिकुड़ कर छोटे हो जाते हैं

रोग का नियंत्रण– नियंत्रण हेतु रोगरोधी किस्म जवाहर 23, किरण, आर 550 का उपयोग करें। घुलनशील गंधक की मात्रा 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें अथवा कवकनाशी के रूप में थायोफिनाईल मिथाईल 70 प्रतिशत डब्ल्यूपी 300 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करना चाहिये।

4. अंगमारी (आल्टरनेरिया लीफस्पाट)– इस रोग के संक्रमण के लक्षण पत्तियों एवं पुष्प पर दिखाई देते हैं। रोग से प्रभावित पौधों में पत्तियों पर अंडाकार गोल आकृति के भूरे काले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। यह रोग फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है। फूलों के अंगों पर धब्बे पड़ जाते हैं और दाने नहीं बन पाते है। रोग से उपज पर काफी कम हो जाती है।

रोग का नियंत्रण– नियंत्रण हेतु उन्नत किस्म के बीजों की बुवाई करें। रोग के नियंत्रण हेतु केप्टान हेक्साकोनाजाल की 500–600 ग्राम मात्रा को 500 लीटर पानी में धोलकर छिड़काव करें।

समन्वित रोग प्रबंधन–

1. खेत से फसल अवशेषों को एकत्रकर जला देना चाहिये एवं तत्श्चात गहरी जुताई करें।
2. फसलचक्र अपनाना चाहिये जिससे मिट्टी में रोग जनकों के निवेश को कम किया जा सके।
3. अगेती बुवाई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवम्बर के मध्य तक कर देना चाहिये।
4. बुवाई से पहले कार्बेन्डाजिम या थयोंफिनिट मिथाइल की 3 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें।
5. फसलों में रोग के दिखाई पड़ने पर आइप्रोडियोन की 0.2 प्रतिशत अथवा मैन्कोजेब की 0.25 प्रतिशत प्रति लीटर मात्रा का छिडकाव करना चाहिये।
6. चूर्णिल आसिता रोग के प्रबन्धन हेतु सल्फेक्स अथवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिये।
7. अनुशंसित रोग प्रतिरोधी किस्मो को प्रयोग में लाना चाहिये।